भेद भाव

सब लोग बोलते हैं कि भेद भाव को मिटा डालो पर मेरा कहना है कि भेद भाव को एक दूसरे से दूर रखने से ही समास्या हल हो सकती है क्योकि न भेद न भाव को कोई मिटा सका है न ही मिटा सकेगा । कारण भेद करना समाजिक प्रर्किया है और भाव मानसिक प्रर्किया है । जरा गौर से देखा जाय तो भेद भाव को मिटना सम्भव ही नही है पर ध्यान दे तो उनको अलग अलग रक्खा जाय या दूर रक्खा जाय तो सम्भव है कि समाज मे कुछ सौम्यता आ जाय ।
तो आईए जरा बरीकी से इस समास्या का हल ढूढा जाय इसके लिय यह जरुरी है कि इन दोनो शब्दो को अलग समझा जाय कि भेद क्या है भाव क्या है ।

भेद- जैसा उपर लिखा जा चुका है कि यह रहा और रहेगा जैसे मैं लम्बा हूँ तुम छोटे हो, मै गरीब हूँ बह अमीर है, तुम हिन्दू हो मै यहूदी हूँ, मै सरकारी नौकर हूँ तुम जनता हो, मै व्यापारी हूँ तुम खरीददार हो, मै इंजीनियर हूँ तुम डाक्टर हो, तुम नौकर हो मै स्वामी हूँ, मै शूद्र हूँ तुम पडिंत हो, मै बनिया हूँ तुम क्षत्रिय हो, तुम तो किसान हो मै उद्योगपति हूँ, मै औरत हूँ तुम आदमी हो, मै मिस्त्री हूँ वह मजदूर है, वह मोटा हूँ तुम पतले हो, मै नेता हूँ और आप एक आम आदमी है चाहे आपके कन्धो पर चढकर ही नेता बना हूँ पर मुझे अब आप से क्या लेना देना,मै तुम्हारा बाप हूँ तुम मेरे बच्चे हो, मै माँ हूँ बहन हूँ बेटी हूँ धर्मपत्नी हूँ । इस तरह यह पूरा पन्ना भरा जा सकता है भेदो की गिनती करते करते आप मै क्या बता रहा हूँ आप सब जानते ही है क्या आप इन सब भेदो को मिटा सकते है हो सकता है आप कर भी पाये इस भेद को दूर तो आप मेरी नजर मे महात्मा हैं आप भगवान के बहुत नजदीक है । मै यहाँ पर आम आदमी की बात आम अदमी से कर रहा हूँ। यह मेरा है वह तुम्हारा है यह सबसे बढा भेद है क्या आप उससे उपर उठ सकते है क्या ?

पर एक बात और है कि हर मनुष्य अपने को अनोखा मानता है उसके लिय भेद भाव जरुरी है । यहाँ पर यह कहना अनुचित नहीं होगा कि भाव आते रहते है पर हर प्राणी की ग्रहणता के अनुसार वह प्राणी उनको अपना बना लेता है ।
भाव - जहाँ तक मेरी समझ जाती है हर समय हर पल हरेक में भाव आते रहते है और उनमे अन्तर नही होता है अगर अन्तर होता है तो इतना ही कि

किस काल मे वह आते है और पात्र कौन है पात्र भी भेदो की तरह अनगिनत है पर भावो मे कोई अन्तर नही होता है भाव क्या है मुझे भूख लगती है, गरमी, सर्दी, मेरे खून का रंग भी लाल है हमारे यहाँ भी सिर्फ बच्चै पैदा होते हैं मुझे भी अपने बच्चे अच्छे लगते है उन्हे भी मै अपने से ज्यादा खुश देखना चाहता हूँ ज्यादा पढा लिखा देखना चाहता हूँ ताकि वह सफल हो, मै भी खुश रहने का अधिकारी हूँ, मेरे को भी अधिकार है एक भारतीय बन कर रहने का बिना किसी रोक टोक के । मेरे सोचने और तुम्हारे सोचने का तरीका फरक नही है अगर भावो मै अन्तर है तो इतना ही मेरे और तुम्हारे भेदो का है हालतो का है समझ का भी हो सकता है पढाई का भी फर्क हो सकता है पर उससे भावो की परिभाषा तो नही बदल जाती है ।

मेरा अन्त में यही कहना है कि किसी भी भेद के साथ किसी भी भाव को जोडा जा सकता है पर उससे न तो भेद में ना भाव मे अन्तर अता है । अन्तर आता है जब हम उन दोनो को जोडकर अपनो को माफ ही नही कर देते है बल्कि दलीले भी दे देते है कि एसा क्यो हुआ बगैरहा बगैरहा और दूसरो को दोषी करार दे देते हैं कारण साफ है क्योकि हमने भेद भाव को जोड दिया जबकि हमको उन दोनो को अलग अलग करके देखना है । यदि आप हालातो और व्यक्ति को अलग अलग रख सके तो दुनिया की बहुत समस्याये समस्याये ही न रहेगी । अच्छे और बुरे भाव हर भेद मे आ सकते है और किसी भी समय आ सकते है । ते यदि भेदभाव को अगर दूर करना है तो इन दोनो को अलग अलग रखिये, मै पहले ही कह रहा था कि भेद भाव को दूर रक्खो भेद भेद भाव अपने आप मिट जायेगा । भगवान, अल्लहा, गौड, कभी भी किसी को न कुछ देते है न लेते है पर हम सबको अपने अपने कर्मो के अनुसार ही फल मिलता है । जैसे उर्जा को पैदा नही किया जा सकता न मिटाया जा सकता है पर बदला जा सकता है स्थूल को उर्जा मे बदलने का काम सिर्फ जीव जन्तु ही कर सकते है आदमी भी उसमे से एक जन्तु है और हम सब सर्वोत्तम पूर्ण विकास की तरफ अग्रसर हो रहे है मसे हर एक प्राणी की जरुरत है तभी हम इस धरा पर है।

उमेश रश्मि रोहतगी 26 मार्च 2008 Phone:(248) 471-5786
24161 नीलन ड्राईव नोवी मिचीगन अमरीका 48375
Email:rurohatgi@yahoo.com Webpage www.rurohatgi.com